संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक २३ ● ०५ जून २०१८ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष षष्ठी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १९४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११९

आर्य समाज द्वारा चरित्र निर्माण शिविर ही बालक बलिकाओं को संस्कारवान बनाता है – डॉ० धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

दिनांक २६/०५/२०१८ कन्या चरित्र निर्माण शिविर समापन पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के यशस्वी प्रधान डा० धीरज सिंह जी ने अपने वक्ततव्य में कन्याओं को उत्साहित करते हुए कहा यह चरित्र निर्माण शिविर निशिचित ही इनके जीवन को एक नया मोड़ देगा। शिविर में इनके भविष्य सम्बन्धी सभी .जानकारियां दी गयी है समय पर यह आर्य कन्या आत्म रक्षा के लिए दुश्मन पर प्रहार भी कर सकती है समय पड़ने अपने स्वाभिमान हेतु समाज भी मुकबला कर सकती है जहाँ पर अंधविश्वास जैसे आडम्बर हो उसे किस प्रकार समाप्त कर सकती है यह शिविर में सब सिखया गया आज महिलाओं में सबसे ज्यादा अन्धविश्वास है, जिसका परिणाम सभी को भोगना पड़ता है।

आर्य समाज ने सदैव लोगों जागरूक करने के कार्य में हमेशा आगे बढ़कर भाग लिया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सर्वप्रथम कन्याओं के शिक्षा पर प्राथमिकता दी गार्गी मदालसा का उदाहरण समाज के समक्ष प्रस्तुत किया।

नारी का शिक्षित होना तथा संस्कारवान होना अति आवश्यक है समाज के निर्माण में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है बालक की प्रथम गुरू मां होती है बालक पहला शब्द ही मां बोलता है। इसलिए महर्षि देव दयानन्द ने कन्या गुरूकुल खुलवाये आज मैकाले शिक्षा पद्धति ने अपना जाल बिछा रखा है शिक्षा व्यापार बन गयी है आर्यसमाज के कार्यकर्ता हमेशा लोगों को जागरूक करने के लिए कई कार्यक्रम करते हैं उनमें से यह एक यह विरांगना चरित्र निर्माण शिविर हैं मैं शिविर में आये सभी आर्य कन्याओं को मंगल कामनाएं देता हूं और आशा करता हूं कि यह शिविर उनके जीवन लिए उपयोगी साबित होगा।

शिविर दिनांक २०.०५.२०१८ से लेकर २६.५.२०१८ तक वहन पूनम आर्या, वहन प्रवेश आर्या के निर्देशन में कन्याओं को कुंककु (कराटे) लाठी, तलवार खेल, संध्या हवन तथा वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराया शिविर का उदघाटन खुर्जा के आईपीएस अधिकारी रविस अख्तर एसपी देहात महोदय ने किया।

डीएम रितु पुनिया एवं तहसीलदार प्रभासिंह जी ने शिविर की संयोजिका शशीलता प्रधानाचार्य ए के पी इण्टर कालेज खुर्जा तथा

शेष पृष्ठ ७ पर

अन्तर राष्ट्रीय गुरूकुल सम्मेलन हरिद्वार की बैठक सार्वदेशिक सभा दिल्ली बैठक में भाग लेते हुए स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

शिमला में ये कैसी प्यास

इन दिनों सैलानियों से गुलजार रहने वाले शिमला के मॉल रोड तक में पानी के टैंकर के आगे बर्तनों के साथ लोगों की लंबी–लंबी कतारें लगी हैं। जिन इलाकों में टैंकर जाने की सुविधा नहीं है, वहां लोग दूर से पानी ढोते हुए दिख रहे हैं। विरोध प्रदर्शन हो रहे है, नारे गूंज रहे हैं, धरना हो रहा है। इस बार तो समर फेस्टिवल भी स्थगित करना पड़ा है। हाई कोर्ट को दखल देकर कड़े निर्देश देने पड़े। हिमाचल सरकार कई दौर की उच्च स्तरीय मीटिंग कर चुकी है। पर कोई हल नहीं मिल रहा।

गर्मियों में शिमला में जल संकट नई बात नहीं है पर इस बार पूरी व्यवस्था ही चरमरा गई है। शिमला में पानी की जरूरत आम तौर पर चार करोड़ २० लाख लीटर प्रतिदिन है, पर दो करोड़ २० लाख लीटर प्रतिदिन ही आपूर्ति हो रही है, जो कुल जरूरत का लगभग आधा है। यह आलम तब है, जब गर्मियों के दिनों में पर्यटन सीजन की वजह से शिमला की आबादी हर साल बढ़ जाती है। यानी आबादी तो बढ़ गई, पर पानी रोजाना की जरूरत से भी आधा मिल रहा है। संकट की बड़ी वजह यही है। एक दलील यह भी दी जा रही है कि इस बात की सर्दियां सूखी गुजर गई, न ढंग की बारिश हुई, न कायदे से बफ गिरी, लिहाजा पानी के स्त्रोत रीजार्ज नहीं हो पाए। ऐसी मासूम दलीलें देते वक्त हम भूल जाते हैं कि शिमला का मौजूदा जल संकट हमारे लालचों की नतीजा है। हमने अपने हिल स्टेशनों के बुनियादी ढांचे की तरफ ध्यान ही नहीं दिया। उन्हें सिफर सैरगाह और मौज–मस्ती का अड्डा समझा। पर्यटन के नाम पर चांदी बटोरने वालों के लिए ये हिल स्टेशन सोने का अंडा देने वाली ऐसी मुर्गी बन गए, जिसका पेट फाड़ डालने में भी किसी ने हिचक नही दिखाई। शिमला में तो इस धंधे की आड़ में ऐसा माफिया भी पैदा हुआ है, जो आड़े वक्त में शिमला वालों के हिस्से का बचा–खुचा पानी तक लूट लेता है। इस बात शिमला के भीषण जल संकट ने सबको आईना दिखा दिया है।

वर्ष १८६४ में अंग्रेजों ने जब इसे अपनी ग्रीष्मकालीन राजधारी घोषित की, तब इस पहाड़ी नगर को करीब सोलह हाजर की आबादी के लिए डिजाइन किया गया था। १८७५ में ढली कैचमेंट एरिया से शिमला को करीब ४५ लाख लीटर पानी मिलता था। १८८० के आसपास रिज पर एक विशाल जलाशय बनाया गया, जहां से इस पहाड़ी शहर के लिए अब भी जलापूर्ति होती है। अंग्रेजों ने शिमला के लिए पहले १६१४, फिर १६२४ में पानी का और इंतजाम किया। तब से अब तक शिमला की आबादी कई गुना बढ़ चुकी है। २०११ की जनगणना के मुताबिक, शिमला की आबादी करीब १.७० लाख है। आबादी में वृद्धि के अनुरूप पानी के इंतजाम नहीं हुए।

आज शिमला पानी के लिए काफी हद तक उसी व्यवस्था पर निर्भर है, जिसे कभी अंग्रेजों ने तैयार किया था। यह अलग बात है कि सात पहाड़ियों पर पसरा शिमला कालांतर में कंकरीट के जंगल के रूप में फैलता चला गया। अंग्रेजों ने तो अपने दौर में शिमला के आसपास जल स्त्रोतों को बचाए रखने के लिए कई पाबंदियां भी लगाई थीं। जैसे, यह सुनिश्चित किया जाता था कि जलग्रहण क्षेत्र में मानवीय गतिविधियां न हो। पर अब शिमला में जंगलों के बीच सीमेंट–कंकरीट के ढांचे उग आए हैं, जिससे पारंपरिक जलस्रोत मरने लगे। मौजूदा जल संकट तो इसका एक संकेत भर है। अगर इसका दोष सिर्फ मौसम पर डाल देंगे, तो यह रेत में सिर घुसेड़ने जैसा शुतुरमुर्गी कर्म होगा।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

तीन प्रकार के मार्ग अर्थात् एक स्थल (भुमि) में, दूसरा जल (समुद्र वा नदियों) में, तीसरा आकाशमार्गों को युद्ध बनाकर भूमिमार्ग में रथ, अश्व, हाथी, जल में नौका और आकाश में विमानादि यानों से जावे और पैदल, रथ , हाथी, घोड़े, शस्त्र और अस्त्र खानपानादि सामग्री को यथावत् साथ ले बलयुक्त पूर्ण करके किसी निमित्त को प्रसिद्ध करके शत्रु के नगर के समीप धीरे-धीरे जावे।।२।।

जो भीतर से शत्रु से मिला हो और अपने साथ भी ऊपर से मित्रता रक्खे, गुप्तता से शत्रु को भेद देवे, उस के आने जाने में उस से बात करने में अत्यन्त सावधानी रक्खे, क्योंकि भीतर शत्रु ऊपर मित्र पुरूष को बड़ा शत्रु समझना चाहिए।।३।।

सब राजपुरूषों को युद्ध करने की विद्या सिखावे और आप सीखे तथा अन्य प्रजाजनों को सिखावें जो पूर्व शिक्षित योद्धा होते हैं वे ही अच्छे प्रकार लड़ लड़ा जानते हैं। जब शिक्षा करे तब (दण्डव्यूह) दण्डा के समान सेना को चलावे (शकट०) जैसा शकट अर्थात् गाड़ी के समान (वराह०) जैसे सुअर एक दूसरे के पीछे दौड़ते जाते हैं और कभी-कभी सब मिलकर झुण्ड हो जाते हैं वैसे (मकर०) जैसा मगर पानी में चलते हैं वैसे सेना को बनावे (सूव्यूह) जैसे सूई का अग्रभाग सूक्ष्म पश्चात् स्थूल और उससे स्थूल होता है वैसी शिक्षा से सेना को बनावे और जैसे (नीलकण्ठ) ऊपर नीचे झपट मारता है इस प्रकार सेना को बनाकर लड़ावे।।४।।

जिधर भय विदित हो उसी ओर सेना को फैलावे, सब सेना के पतियों को चारों और रख के पद्मव्यूह) अर्थात् पद्ममाकार चारों ओर से सेनाओं को रखके मध्य में आप रहै।५।।

सेनापति और बलाध्यक्ष अर्थात् आज्ञा का देने और सेना को साथ लड़ने लड़ाने वाले वीरों को आठों दिशाओं में रकखे, जिस ओर से लड़ाई होती हो उसी ओर से सब सेना का मुख रक्खे परन्तु दूसरी और भी पक्का प्रबन्ध रक्खे नहीं तो पीछे वा पार्श्व से शत्रु की घात होने का सम्भव होता है।।६।।

जो गुल्म अर्थात् दृढ़ स्तम्भों के तुल्य युद्धविद्या से सुशिक्षित धार्मिक स्थित होने और युद्ध करने में चतुर भयरहित और जिनके मन में किसी प्रकार का विकार न हो उन को चारों ओर सेना के रक्खें।।७।।

जो थोड़े पुरूषों से बहुतों के साथ युद्ध करना हो तो मिलकर लड़ावें और काम पड़े तो उन्हीं को झट फैला देवे। जब नगर दुर्ग वा शत्रु की सेना में प्रविष्टि होकर युद्ध करना हो तो सब 'सूचीव्यूह' अथवा 'वज्रव्यूह' जैसे दुधारा खड्ग, दोनों ओर युद्ध करते जायें और प्रविष्ट भी होते चलें वैसे अनेक प्रकार के व्यूह अर्थात् सेना को बनाकर लड़ावें जो सामने (शतघ्नी) तोप वा (भुशुण्डी) बन्दूक छूट रही हो तो 'सर्पव्यूह' अर्थात् सर्प के समान सोते-सोते चले जायें, तब तोपों के पास पहुंचें तब उनको मार वा पकड़ तोपों का मुख शत्रु की ओर फेर उन्हीं तोपों से वा बन्दूक आदि से उन शत्रुओं को मारें अथवा वृद्ध पुरूषों को तोपों के मुख के सामने घोड़ों पर सवार करा दौड़ावें और मारें, बीच में अच्छे-अच्छे सवार रहैं, एक बार धावा कर शत्रु की सेनपा को छिन्न-भिन्न कर पकड़ लें अथवा भगा दें।।८।।

जो समभूमि में युद्ध करना हो तो रथ घोड़े और पदातियों से और जो समुद्र में युद्ध करना हो तो नौका और थोड़े जल में हाथियों पर, वृक्ष और झाड़ी में बाण तथा स्थल बालू में तलवार और ढाल से युद्ध करें करावें।।९।।

जिस समय युद्ध होता हो उस समय लड़ने वालों को उत्साहित और हर्षित करें। जब युद्ध बन्ध हो जाय तब जिस से शौर्य और युद्ध में उत्साह हो वैसे वक्तृत्वों से सब के चित्त को खान-पान, अस्त्र-शस्त्र सहाय और औषधादि से प्रसन्न रक्खें। व्यूह के बिना लड़ाई करे न करावे, लड़ती हुई अपनी सेना की चेष्टा को देखा करे कि ठीक-ठीक लड़ती है वा कपट रखती है।।१०।।

किसी समय उचित समझे तो शत्रु को चारों ओर से घेर कर रोक रक्खें और इसके राज्य को पीड़ित कर शत्रु के चारा, अन्न, जल और इन्धन को नष्ट दूषित कर दे।।११।।

शत्रु के तालाब, नगर के प्रकोट और खाई को तोड़ फोड़ दे, रात्रि में उन को (त्रास) भय देवे और जीतने का उपाय करे।।१२।।

जीत कर उन के साथ प्रमाण अर्थात् प्रतिज्ञादि लिखा लेवे और जो उचित समय समझे तो उसी के वंशस्थ किसी धार्मिक पुरूष को राजा कर दे और उस से लिखा लेवे कि तुम को हमारी आज्ञा के अनुकूल अर्थात् जैसी धर्मयुक्त राजनीति है उसके अनुसार चल के न्याय से प्रजा का पालन करना होगा ऐसे उपदेश करे और ऐसे पुरूष उनके पास रक्खे कि जिससे पुनः उपद्रव न हो और जो हार जाय उसका सत्कार प्रधान पुरूषों के साथ मिलकर रत्नादि उत्तम पदार्थों के दान से करे और ऐसा न करे कि जिस से उस का योगक्षेम भी न हो, जो उसको बन्दीगृह करे तो भी उस का सत्कार यथायोग्य रक्खे जिस से वह हारने के शोक से रहित होकर आनन्द में रहे।।१३।।

क्योंकि संसार में दूसरे का पदार्थ ग्रहण करना अप्रीति और देना प्रीति का कारण है और विशेष करके समय पर उचित क्रिया करना और उस पराजित के मनोवाञ्छित पदार्थों का देना बहुत उत्तम है और कभी उसको चिड़ावे नहीं, न हंसी और ठट्ठा करे, न उसके सामने हमने तुझको पराजित किया है ऐसा भी कहै, आप हमारे भाई हैं इत्यादि मान्य प्रतिष्ठा सदा करे।।१४।।

क्रमशः

धरोहर...

श्रद्धेय पं० रामचन्द्र देहलवी का पुण्य स्मरण

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

रामनवमी का पावन पर्व था। आर्य समाज का वार्षिक सम्मेलन चल रहा था। नगर में विशेष प्रसन्नता का वातावरण था और हम सभी गुरूकुल के छात्र स्वामी जी के साथ वार्षिक सम्मेलन देखने के लिए ततारपुर से पैदल ही आये थे। वहीं पर ठहर गये। मध्यान्ह के कार्यक्रम में अभी समय था। तभी स्वामी जी ने कहा चलो धर्मपाल, देहलवी जी से मिलकर आते हैं। ब्रह्मचारी वेदपाल जी (वर्तमान डॉ० वेदपाल जी) बड़ौत भी साथ थे। एक ब्रह्मचारी कोई और था। हम आर्य समाज से पैदल ही उनके घर पर पहुँचे। उनसे मिलने की विशेष इच्छा थी। उनके विषय में जैसा सुना था कि वे आर्य समाज के बहुत बड़े विद्वान् हैं, शास्त्रार्थ–महारथी हैं, कुरान कण्ठस्थ है, बाइबिल पर भी अच्छी पकड़ है, अपने वेद–शास्त्रों के भी ज्ञाता हैं, हैदराबाद के सत्याग्रह में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, ऐसे महापुष के दर्शनों का सौभाग्य मिल जाये तो बस विशेष सौभाग्य की बात होगी, इसी उत्साह से स्वामी जी दर्शन कराने ले जा रहे थे और उनकी प्रेरणास्पद कहानियां भी बताते जा रहे थे। उनके घर पर उनके भांजे विमल आर्य जी मिले। बैठाया, पानी पिलाया और तब स्वामी जी से मिलाने के लिए देहलवी जी को अन्दर से लेकर आये। उन्हें कम्पन–वायु का रोग लग चुका था, शरीर कमजोर होने लगा था, लेकिन वाणी में माधुर्य, प्रसन्नता, उत्साह, आत्मीयता और सिद्धान्तनिष्ठा तथा महर्षि के प्रति निष्ठा को देखने का सौभाग्य एक साथ ही प्राप्त हो गया। स्वामी जी से कुशल–क्षेम पूछकर और अपनी कुशलता स्वामी जी को बताकर हमारी तरफ दृष्टिपात किया और बड़े आत्मीय मिलनसार की तरह प्रसन्न होकर कुछ प्रश्न किये। उनकी वार्ता से तथा स्नेहिल व्यवहार से वह घटना हमारे जीवन की एक धरोहर बन गयी। आज जब भी देहलवी जी की कोई चर्चा करता है तो वही दृश्य साक्षात् होकर मन में आह्लाद पैदा करता है। रात्रि के कार्यक्रम की चर्चा स्वामी जी ने की और उनके प्रवचन की स्वीकृति ली तथा कुछ आर्य समाज के विषय में वार्तायें हुई। गुरूकुल ततारपुर की प्रगति एवं हमारा परिचय भी स्वामी जी ने उनसे कराया। छोटी–सी आयु में जैसा सुना और जितना याद है वही हमारे लिए उस समय पर्याप्त था। स्वामी जी ने बताया कि देहलवी जी का भी जन्म रामनवमी वाले दिन ही हुआ था और आर्य समाज प्रतिवर्ष सम्मेलन पर रामनवमी के दिन उनका सम्मान करता है। इससे कार्यक्रम की शोभा में वृद्धि होती है। सम्भवतया इसीलिए मिलने गये थे। रात्रि के समय जब कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ तो उन्हें रिक्शा में बैठाकर लाया गया और मंच के पास कुर्सी पर बैठा दिया। उनके आते ही लोगों में श्रद्धा और प्रसन्नता समवेत दिखाई देने लगी। भजन–संगीत के पश्चात् मंत्री महोदय ने उनका परिचय दिया और अभिनन्दन किया। मुझे स्मरण आ रहा है कि उस दिन श्री रामगोपाल जी शालवाले भी दिल्ली पधारे थे। उन्होंने भी स्वागत में माल्यार्पण किया और भाषण भी सभी वक्ताओं के इन्हीं को इंगित करके दिये जा रहे थे जैसे किसी मुख्य अतिथि के आगमन पर उनकी प्रशंसा की जाती है। आज उनकी भव्यता और भी अच्छी लग रही थी। उनकी लम्बी मूँछें महाराणा प्रताप की याद दिला रही थीं और पगड़ी से भी किसी विद्वान पं० लेखराम जी की तरह शोभायमान थे। चेहरे की भव्यता वाणी की मधुरता के साथ और अधिक बढ़ गयी थी। आपने जो भाषण दिया लोगों ने वाह–वाह करना शुरू कर दिया। मुझे तो इतना ही याद है कि उन्होंने कुरान शरीफ के आधार पर मांस खाना निषेध बताया था कि जब कुरान में भी मांस खाना मना है फिर लोग मांस क्यों खाते हैं। उनके भाषण का जनता पर प्रभाव पड़ा देख उनके विषय में जिज्ञासा और बढ़ी। फिर आपकी लिखी पुस्तकें पढ़ी। विमल आर्य जी से सम्पर्क बना जो आज तक भी बना हुआ है। वास्तव में उन जैसा विद्वान् धीर–गम्भीर, साहसी, बहादुर अब दिखाई नहीं देता। वे सदैव आर्य समाज की शान बनकर जिये और वरदान बनकर रहे। आर्य समाज हापुड़ को अपना स्थानीय निवास बना लिया था जो आज भी विद्यामन है। वैसे आपका जन्म मध्य प्रदेश के नीमच शहर में हुआ थ लेकिन आपको प्रसिद्ध दिल्ली में रहने पर प्राप्त हुई। आपके शास्त्रार्थ आर्य समाज का इतिहास बन गये। छोटी–छोटी बातों से बड़े–बड़े शास्त्रार्थ जीत लेते थे। आपने ही एक दिन बताया कि एक मौलवी से शास्त्रार्थ हे रहा था। वह मूर्ति का विरोध कर रहा था। देहलवी जी कहने लगे कि बिना मूर्ति तो आपका कोई काम नहीं चलता। इस पर वह उत्तेजित हो गया और इसी बात पर आर–पार की बाजी लग गयी। देहलवी जी मुस्कुराते हुए बोले कि बात पक्की करो। बात पक्की होने पर देहलवी जी बोले कि जेब से रूपया निकालो। उसने रूपयो निकालकर दिया तो उन्होंने उस सिक्के पर बनी मूर्ति दिखते हुए कहा कि यह क्या है? आप तो सदैव इसे जेब में रखते हैं। मौलवी शरमा गये। लोगों ने तालियाँ बजाई और उन्हें विजयी घोषित किया। एक दिन चर्या में बताया–मौलवी ने पूछा कि ऐसा काम बताओं जिसे करते–करते कभी कोई थके नहीं। मौलवी ने सोचा जो भी काम है कभी तो थकेगा ही। देहलवी जी पराजित हो जायेंगे। लेकिन आपने कहा कि जब तक व्यक्ति जीवित रहता है श्वास लेता हुआ कभी नहीं थकता। इस पर मौलवी उनका मुख देखते ही रह गये और शर्म अनुभव की। एक बारदेलवी जी एक मुस्लिम सम्मेलन में गये और मंच पर बोलने के लिए समय मांगा। मना करने पर बोले एक मिनट ही दे दीजिए तो अध्यक्ष ने कहा कि एक मिनट तो दे देंगे लेकिन शर्त है कि कुरान अथवा मुसलमानों के विषय में कुछ नहीं कहोगे।

अपने ही विषय में कुछ कह देना। सोचा एक मिनट में क्या बिगड़ जायेगा। श्री देहलवी जी मंच पर आये और कहा कि भाइयो, हम आर्य (हिन्दू) लोगों में एक बहुत बड़ी अच्छाई है, विशेषता है कि आपस में भाई–बहिन होकर पवित्र सम्बन्ध रखते, विवाह करके पति–पत्नी नहीं बनते। इतना बोलते ही खलबली मच गयी और सारे सम्मेलन का स्वाद ही बिगड़ गया। इसीलिए काफिर को समय देने के लिए मना किया था, लेकिन अब तो वह दिग्विजयी देहलवी अपनी बात संक्षेप में कहकर गागर में सागर भर चुके थे। ऐसे महामनीषी विद्वान् लेखक–उपदेशक का पुण्य स्मरण करते हुए सादर नमन करते हैं।

प्रभो! आर्य समाज में फिर ऐसी शास्त्रार्थ–महारथी परम्परा में विद्वान् बनने की प्रेरणा प्रदान करें।

पुस्तक ने भाग्य संवारा

अब्राहम लिंकन को बचपन से ही अच्छी पुस्तकें पढ़ने का शौक था। उन्हें एक बार किसी तरह पता चला कि उनके गुरू एंड्रयू काफर्ड के पास जार्ज वाशिंगटन की जीवनी है। यह जानकर वे काफर्ड के पास पहुंच गये और कहा "गुरूजी! मुझे यह पता चला है कि आपके पास जार्ज वाशिंगटन की एक अत्यन्त सुन्दर जीवनी है। अगर कृपा करके वह मुझे दो–तीन दिन के लिए दे देते तो मैं आपका जीवन भर आभारी रहता।

काफर्ड ने कहा–'पुस्तक तो मेरे पास अवश्य है मगर खराब हो जाने के भय से मै। कि को वह पुस्तक नहीं देता। बहुत बिनती करने पर अन्त में काफर्ड में वह पुस्तक लिंकन को दे दी।

एक रात को जब सभी लोग सो गये तब लिंगन बहुत रात गये तक पुस्तक को पढ़ते रहे । आधी रात के बाद जब माँ ने कहा–बेटा, अब पढ़ना बन्द कर दो, कल दिन में पढ़ लेना।' लेकिन संयोग की बात हुई उस रात लिंकन के सो जाने पर जम कर वर्षा हुई। सवेरे सो कर उठने पर लिंकन ने देखा कि पुस्तक पानी के छींटे से मटमैली हो गयी है। अब लिंकन चिन्ता में पड़ गये। वह उसी समय उस पुस्तक हो लेकर गुरू काफर्ड के पास जा पहुंचे और अत्यन्त दुःख के साथ सारी बात कह गये। सुनकर काफर्ड बहुत बिगड़े और कहने लगे– 'वह मुझे बहुत प्रिय थी। तुम्हारी लापरवाही ने पुस्तक को खराब कर दिया। तुम्हें इसका मूल्य चुकाना होगा।' लेकिन मेरे पास तो पैसे नहीं हैं। अगर आप उसके बदले मुझसे काम करा लें तो मुझको प्रसन्ता ही नहीं अपार सन्तोष भी होगा।

यह सुनकर काफर्ड बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने लिंकन को काम सौंप दिया। तीन दिनों तक लिंकन गुरू के खेतों में कार्य करते रहे। काम घास काटने का था। इस प्रकार जब पुस्तक का मूल्य काफर्ड को प्राप्त हो गया तो वह पुरानी पुस्तक लिंकन को लौटा दी। क्योंकि वह पुस्तक अब मेहनत के बदले लिंकन की थी।

अपने परिश्रम, सत्यवादिता तथा अध्यवसाय के मार्ग पर चलकर ही लिंकन अमेरिका के भाग्य विधाता हुए।

''महर्षि दयानन्द की देन''

• वंशीधर शुक्ल, प्रधान जिला आ.प्र.स. हरदोई

उन्नीसवीं सदी में देश को पतन के गर्त से निकालने में वेदोद्धारक, वैचारिक क्रांति के प्रणेता एवं स्वराज्य, स्वराष्ट्र, स्वधर्म, स्वसंस्कृति व स्वभाषा के प्रबल पक्षधर स्वामी दयानन्द सरस्वती अग्रगण्य विभूति हैं। इनके द्वारा स्थापित आर्य सामज एवं रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की लहर से केवल भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व प्रभावित हुए बगैर नहीं रहा। आर्य समाजी आन्दोलन ने एक और जहाँ ख्रीस्टानी, कुरानी, पुरानी बौद्ध-जैन आदि सम्प्रदायों की जड़ों पर ऐसा प्रहार किया कि अवैज्ञानिक व पाखण्डी मत-मतान्तरों के दुर्ग ढह गये, वहीं दूसरी ओर इससे निकले क्रान्तिकारी राष्ट्रभक्त वीरों ने ब्रिटिश शासन की चूलें हिला दीं। कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले प्रसिद्ध राजनयिक पट्टाभि सीतारमैया ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में 80 से 85 प्रतिशत भागीदारी आर्य समाजियों की स्वीकार की है। वहीं आर्य समाज आज अधिसंख्य हिन्दू सम्प्रदायों एवं छद्म धर्मनिरपेक्ष राजनैतिक दलों की आंखों की किरकिरी बना हुआ है। देश में फिर से उसी धार्मिक पाखण्डों, छुआछूत, ऊँच-नीच, जाति-पांति आदि अज्ञानतापूर्ण आचरण की जड़ें गहराई तक धंसी हैं जिन्हें दयानन्द जी ने अपनी शास्त्रीय तर्क-शैली से उखाड़ फेंका था। महर्षि की इस परम्परा को उनके अनुयायियों ने आगे बरकरार रखते हुए वैदिक धर्म की बलिदेवी पर अपने प्राण तक अर्पण कर दिए। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, मदन लाल धींगरा, भाई परमानन्द, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव आदि ने अनेक वीर सपूतों की उत्सर्ग गाथाएं स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। महर्षि के 'कृण्वन्तों विश्वमार्यम्' तथा ''लौटो वेदों की ओर' उद्घोषों में विश्वजन कल्याण का भाव निहित है। अध्यात्मिक ज्ञान शून्यता के कारण भौतिकवादी वर्ग 'खाओ-पिओ-मौज करो' तक सीमित रहकर केवल अपने व अपनों तक केंद्रित है। आध्यात्मिक ज्ञान के शिखर पुरूष आदि गुरू शंकराचार्य का 'ब्रह्म सत्यं, जगत मिथ्या' की वास्तविकता अब यह है कि उनके गद्दीधारक शिष्य भौतिक सुख सुविधाओं में आकण्ठ डूबे हैं। वैदिक चिन्तन तथाकथित धर्मगुरूओं के विरोधाभासी आचरण से परे एक आदर्शपूर्ण एवं व्यावहारिक धरातल प्रदान करता है जिसका अभिप्रेत यजुर्वेद के इस मंत्र-

''ईशावास्यमिदं सर्वं, यत्किंचजगत्यां जगत्।
तेन व्यक्तेन भुञ्जींथ, मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।''

में निहित है जहाँ त्यागवादी संस्कृति के समक्ष भोगवाद तुच्छ एवं बौना सिद्ध होता है।

19वीं सदी को भारतीय पुनर्जारण काल माना जाता है। इस नवजागरण काल के पुरोधा महर्षि दयानन्द सौराष्ट्र की पुण्य भूमि टंकारा में अवतरित हुए। उस समय तक ब्रिटिश शासन की जड़ें गहरी हो चुकी थीं। ईसाई धर्म प्रचारको द्वारा देश के कोने-कोने में चर्चों की स्थापना हो चुकी थीं जहाँ ईसाई धर्मग्रंन्थों का प्रचार-प्रसार व्यापक रूप में चल रहा था। विदेशी विद्वानों द्वारा हमारे संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन वैदिक साहित्य की श्रेष्ठता जानने की दृष्टि से नहीं अपितु उन्हें निकृष्ट, भ्रामक, मिथ्या एवं अनुपयोगी सिद्ध करने हेतु किया गया। इस योजनाबद्ध प्रयास का परिणाम यह हुआ कि भावुक प्रकृति के भारतीय युवक 'गास्पेल' के अनुयायी बन गये। उनमें मधुसूदन दत्त, लालबिहारी डे, व्योमकेशचंद्र बनर्जी, रमाबाई, नीलकण्ठ शास्त्री, केशवचंद्र सेन, रामतनु लाहिरी, प्रताप चंद्र मजूमदार आदि प्रमुख नाम है।

राजनैतिक उथल-पुथल, सामाजिक गतिहीनता, गुरूकुल शिक्षा पद्धति का अवसान आदि से पनपे साम्प्रदायिकतावाद ने वैदिक संस्कृति को आच्छादित कर लिया था और विश्व गुरू रहा भारत देश ब्रिटिश शासन काल में एक राजनैतिक व आर्थिक इकाई बनकर रह गया। एक ओर धर्म निरपेक्ष भौतिक विज्ञानवाद आधारित पश्चिमी बुद्धिवाद का बोलबाल पनपा तो दूसरी ओर धार्मिक आस्थाओं पर टिकी प्राचीन भारतीय संस्कृति से बौद्धिक क्रांति का अभ्युदय हुआ। परम्परावादी चिंतक इस अपसांस्कृतिक प्रवाह से बचकर अपनी मान्यताओं को संजोते रहे किन्तु अपरिपक्वजन पाश्चात्य प्रवाह में बह गये और यथास्थितिवाद को स्वीकार कर बैठे। मैकाले की कुटिल नीति से अंग्रेजी का उत्थान और देववाणी (संस्कृत) का पतन हो गया। कतिपय पूर्ववर्ती वैदिक विद्वानों द्वारा वेदों के जो माष्य हुये थे वे पौराणिक कथाओं की शैली पर आधारित थे जिनमें अश्लीलता का काफी अंश था। अतः महर्षि दयानन्द ने विशुद्ध शास्त्रीय पद्वति अपना कर वेद सहित समस्त वैदिक साहित्य का गहन अध्ययन गुरू विरजानन्द के सानिध्य में किया। अपने गुरू की आज्ञा से ही वह वेदोद्धार करने का संकल्प लेकर भारतीय संस्कृति के पुनर्स्थापन व लोक कल्याण में लग गये।

दयानन्द जी ने अपनी पैनी दृष्टि से भारत के विश्वगुरू रहने से लेकर इसके अद्यःपतन तक की ऐतिहासिक परिस्थितियों का सूक्ष्म विवेचन किया और यह पाया कि वैदिक संस्कृति के मूल से प्रथक् होकर पनपी पथभ्रष्टता के कारण ही देश में कुरीतियां पनपी। पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष बहुदेवतावाद, मतमान्तर, छुवाछूत, खानपान के दोष के कारण शारीरिक अपवित्रता, वैचारिक गिरावट, भौतिकवादी जीवन, बाल विवाह, मूर्तिपूजा, पाखण्ड आदि ऐसी कुरीतियां थी जिनके कारण हमारा राष्ट्र मांडलिक राज्यों में बंट गया। हमारी इस फूट का लाभ विदेशी ताकतों ने उठाया। हूण, कुषाण, शक, यवन, म्लेच्छों, मुगलों से लेकर अंग्रेजों तक का वर्चस्व हमारे देश पर रहा जिन्होंने हमारी अकूत सम्पत्ति लूटी, जनता पर अत्याचार किये और देश का विभाजन कराया।

विलक्षण प्रतिभा के धनी, दृढ़इच्छाव्रती एवं निर्भीक सन्यासी स्वामी दयानन्द जी ने ब्रिटिश हुकुमत की परवाह न करके भारतीय वैदिक संस्कृति की पुनःस्थापना करने में अपना जीवन अर्पित कर दिया। उन्होंने देश को नव चेतना व गतिशीलता प्रदान की। देश के लिए दयानन्द जी की क्या देन है? यह बहुआयामी विषय है। और एक समृद्ध व प्रगतिशील राष्ट्र निर्माण के लिए क्या किया जाना अपेक्षित है? इस दृष्टि से प्राचीन ऋषि परम्परा की प्रमुख कड़ी के रूप में केवल दयानन्द खरे उतरे हैं। अतः अगले अनुच्छेदों में हम महर्षि के अवदानों का धार्मिक विश्लेषण करेगे।

1. धार्मिक देन :- स्वामी दयानन्द समग्रता में धार्मिक ऋषि थे। परन्तु सन्यासी होकर भी उन्होंने समाज में विदेशी संस्कृतियों के अपमिश्रण से उत्पन्न धार्मिक विकृतियों का सूक्ष्म अन्वीक्षण किया। वैदिक हिन्दू समाज की विशुद्ध एवं वैज्ञानिक परम्पराओं के प्रतिकूल अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, बहुदेवतावाद, छुवाछूत, बलिप्रथा आदि की जड़े गहरी हो चुकी थी। धार्मिक संकीर्णता व अवैदिक पूजा पद्धति के कारण ईसाई मिसनरियों को अशिक्षितों, गरीबों, आदिवासियों को प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन करने का अच्छा अवसर मिल गया। देखते देखते असंख्य हिन्दू ईसाई बन गये। दयानन्द जी ने 'वेदोऽरिवलो धर्म मूलम्' के सिद्धान्त को उद्घाटित करते हुए भारतीयों को वेद की ओर लौटने का नारा दिया। हिन्दू धर्म की मान्यतायें पौराणिक कथाओं तक सिमटी थीं क्योंकि तथाकथित विद्वत्वर्ग द्वारा इन कल्पित कथाओं गप्पों को प्रामाणिक सिद्ध करते हुए वेदों के कलेवर को तद्नुकूल बना लिया गया। ऊवट, महीधर, सायण आदि के वेद भाष्य पौराणिक परिधि में ही थे जिन्हें पाश्चात्य जगत ने भी प्रामाणिक मानकर स्वीकार किया। अतः दयानन्दजी ने यास्काचार्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों को सर्वाधिक तत्यपूर्ण एवं औचित्यपूर्ण मानकर अपनी तर्कपूर्ण शैली में वेदों का भाष्य किया। उन्होंने वैदिक पदों को रूढ़िगत के बजाय योगिक अर्थ करके तत्कालीन अंध परम्परा के विरूद्ध वेदमंत्रों में आध्यात्म व विज्ञान का समन्वय सिद्ध किया। अपने कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ प्रमुख नामों की वेदसम्मत व्याख्या से लेकर दसवें समुल्लास तक वैदिक शिक्षा के स्वरूप ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास आश्रमों की व्याख्या, राजनीति के विज्ञजनपरक राजधर्म का विधान, ईश्वर का सच्चा स्वरूप, प्रस्तुत किया। स्वामी जी ने वेद को स्वतः प्रमाण माना और वेद सम्मत् ब्राह्मण ग्रंथों, अरण्यकों, उपनिषदों को मौलिक ज्ञानार्जन का आधार बताया। मूर्तिपूजा, बलिप्रथा सतीप्रथा आदि को कुरीतियों की श्रेणी में रखते हुए उनका प्रबल विरोध किया। एकेश्वरवाद, त्रेतावाद (ईश्वर जीव प्रकृति) पुनर्विवाह शुद्धिकरण संस्कार जैसे बहुआयामी व्यावहारिक सिद्धान्तों के अपनाने पर बल दिया। ''यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः'' महर्षि कणादि के सूत्र का प्रयोगजन्य बोध दयानन्द जी ने कराया जिससे धर्म का सार्वभौमिक स्वरूप समझा जा सके और सम्प्रदायिक अंधविश्वासों से बचा जा सके। स्वामी जी की वैज्ञानिक तर्कप्रधान सत्य सनातन वैदिक मान्यताओं और धर्म विषयक व्याख्या के खण्डन का दुःसाहस आज तक जिन्होंने किया उन्हें निरूत्तर ही होना पड़ा है। उनके 'शास्त्रार्थ-संकलन' के द्वारा इसकी पुष्टि की जा सकती है।

2. सामाजिक सुधार के क्षेत्र में देन– महर्षि

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

'' महर्षि दयानन्द की ...

दयानन्द जी ने वैदिक संस्कृति की स्थापना के साथ समाज सुधार की दिशा में व्यापक कार्य किए। वैदिक आचरण के विरूद्ध पनपी सामाजिक कुरीतियों को उन्होंने सदियों तक भारत के गुलाम रहने का कारण माना जिनमें मूर्ति पूजा व हिंसक बलि प्रथा मुख्य है। स्त्री व पुरूषों को एक समान अधिकारों के अंतर्गत जीवन यापन करने की जोरदार वकालत दयानन्द जी ने की। पुरूषों द्वारा अध्यारोपित बंधनों से नारियों को मुक्त कराकर स्वतंत्र जीवन जीने, शिक्षित होने व सहभागितापूर्ण सामजस्य बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा आदि का विरोध और पुरूषों की भांति स्त्रियों के पुनर्विवाह का समर्थन स्वामी जी ने तत्कालीन समाज सुधारकों को जातिगत व्यवस्था से भिन्न गुण-कार्य परक बनाने पर बल दिया। '' समान प्रसवात्मिका जातिः'' की व्यवस्था का दयानन्द जी ने जन्मना जाति प्रथा को नकारते हुए कर्म प्रधानता अर्थात् वैदिक वर्ण व्यवस्था को श्रेष्ठ माना। उनका दृष्टिकोण उदार मानवतावादी तथा सार्वभौमिक था जैसा कि अधोलिखित मंत्र-

'अयं निजः परोवेत्ति गणना लघुचेतसाम्।

उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्। का सार है। हिन्दू समाज में व्याप्त छुआछूत को स्वामी जी ने अभिशाप बताया जिसका निराकरण हमारे संविधान में स्वराज मिलने पर संभव हो सका। बलात् व प्रलोभन से कराये गये हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन का समाधान आर्य समाज ने शुद्धि आंदोलन चलाकर किया जिसमें अग्रणी विभूति स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने प्राण गवाने पड़े। समाज सुधार की दिशा में आर्य समाज द्वारा स्थापित अनाथालय, दलितोद्धार एवं आपदा सहायता केन्द्र, विधवा आश्रम आदि सराहनीय कार्य हैं।

3. शिक्षा के क्षेत्र में देन – भारतीय गुरूकुल शिक्षा पद्धति को विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा तहस-नहस किया जा चुका था। मैकाले अपनी कुटिल नीति में स्फल हो चुका था। देश में काले अंग्रेजों की फौज तैयार हो रही थी। भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं के विरूद्ध अंग्रेजी शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य वैदिक मूल्यों को दीनहीन सिद्ध करना और अंग्रेजियत का यशोगान करना था ताकि हम अपने मूल से कट जायें। स्वामी दयानन्द ने इस कुचाल को भांप लिया था और तत्कालीन स्थिति के अनुकूल दयानन्द एंग्लोवैदिक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना कराकर वैदिक वाङ्मय की महत्ता को पुनर्स्थापित किया। साथ ही साथ तुलनात्मक दुष्टिकोण अपनाकर भारतीय शिक्षण में पाश्चात्य दर्शन व ज्ञान-विज्ञान का समावेश किया। इसका निहितार्थ वैदिक पृष्टिभूमि में विदेशी ज्ञान भण्डार का तुलनात्मक परीक्षण करना था। बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देकर आर्यकन्या विद्यालयों / गुरूकुलों की स्थापना महर्षि की कल्पना का सार है। स्त्री शिक्षा विषयक महर्षि दयानन्द का यह दूरदर्शी प्रयास शंकराचार्य जी के इस अदूरदर्शितापूर्ण कथन '' स्त्री शूद्रौना धीयाताम्'' का करारा उत्तर था और उन्होंने सिद्ध कर दिखाया था कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता''।

आज विश्वस्तर पर फैली आर्यसमाजें शिक्षण संस्थायें आर्य सभ्यता, वैदिक सिद्धान्तों एवं मूल्यों को जीवन्त रखने में सक्रिय योगदान कर रही हैं। इनका उद्देश्य ईश्वर की पूजा का वैदिक स्वरूप कुप्रथाओं का खण्डन, याज्ञिक अनुष्ठान, षोडश संस्कार आदि सम्पन्न करने का है। आज मंदिरों-मठों के तमाम ढोंगी बाबाओं-सन्तों की पोलें खुल चुकी हैं और कुछ सलाखों के पीछे जा चुके हैं। झूठे भगवानों के कपटी-ठग भक्तों को आज समाज घृणा की दृष्ट से देख रहा है।

4. राष्ट्रवादी राजनैतिक दृष्टिकोणः- महर्षि दयानन्द प्रखर राष्ट्रवादी संत थे। भले अधिकांश जन उन्हें केवल धर्म की परिधि तक सीमित रखकर धर्मगुरू स्वीकारते हैं किन्तु राष्ट्र एवं धर्मराष्ट्रीयता के प्रति उनके विचार शीर्षस्थ कहे जाने वाले राजनेताओं की तुलना में अधिक श्रेष्ठ हैं। वह राष्ट्रीय नवजागरण के पुरोधा थे जिन्होंने उद्घोषणा की थी कि "भारत भारतीयों के लिए है तथा स्वराज सुराज से श्रेष्ठ है" महर्षिकृत ग्रन्थों में सर्वत्र न्यायपूर्ण निष्पक्ष शासन पद्धति की वकालत की गयी है। उनकी दृष्टि में प्रजातंत्र शासन व्यवस्था सर्वोत्तम है किन्तु दोषरहित वंशानुगत राजतंत्र के प्रति भी उन्होंने सहमति व्यक्त की है। शासनतंत्र का संचालन आप्तपुरूषों की मंत्रिपरिषद द्वारा किया जाना चाहिए जिसमें राजार्य सभा, धर्मार्थ सभा तथा न्याय सभा का गठन निहित हो। सैन्य व्यवस्था में बलिष्ठ पराक्रमी, युद्ध कला प्रवीण राष्ट्रभक्त योद्धाओं की नियुक्ति हों। इन योद्धाओं को आग्नेयास्त्र, प्रक्षेपास्त्र, युद्धक विमान, व्यूहरचना सहित रणकौशल में महारत हासिल हो। युद्ध में शत्रुओं को परास्त करना, संधि-मैत्री करना तथा अपने अनुकूल बनाना राष्ट्ररक्षा का मूल मंत्र होना चाहिए।

न्याय व्यवस्था के अंतर्गत महर्षि द्वारा कठोर दण्ड विधान कायम करने व तद्नुसार अपराध का वर्गीकरण कर उचित दण्ड देने पर जोर दिया गया। अज्ञज्ञनी की अपेक्षा ज्ञानी को, निम्पदधारी की अपेक्षा उच्चपदधारी को उत्तरोत्तर अधिक दण्ड मिलना चाहिए। शासन के मुखिया उच्चपदधारी को उत्तरोत्तर अधिक दण्ड मिलना चाहिए। शासन के मुखिया को अपराध करने पर सबसे अधिक कठोर दण्ड मिले।

5. आर्थिक क्षेत्र में देन : महर्षि दयानन्द ने भारत को विश्व के देशों का सिरमौर बताया क्योंकि यहां की धरा शस्य-श्यामला रही है। यहां हर प्रकार की फसलों, वनसम्पदा, खनिज-संसाधनों का प्रचुर भण्डार है। देश की सतत् प्रवाही नदियों ने इसे सर्वश्रेष्ठ कृषि प्रधान देश होने का गौरव प्रदान किया है। जहां किसान राजाओं का राजा कहा जाता है। कृषि हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। पशुपालन व कृषि आधारित उद्योग इसे सुदृढ़ बनाते है। गोपालन, गोवंशसंवर्द्धन की महन्ता का विशद विवेचन महर्षि के 'गोकरूणानिधि' नामक ग्रन्थ में मिलता है जो अथर्ववेद के सार के रूप में प्रणीत है। यदि महर्षि प्रणीत ग्रन्थों का अनुशीलन कर उन्हें व्यवहार में उतारा जाय तो भारत पुनः सोने की चिड़िया बन जायेगा।

अन्य अवदान- उपर्युक्त के अलावा दर्शन, भाषा, विज्ञान आदि के क्षेत्र में भी महर्षि दयानन्द के विचार यकदम शोधपूर्ण, विज्ञानपरक व व्यवहार जन्य सिद्ध होते है। महर्षि ने संस्कृत को विश्वभाषाओं की जननी माना और हिन्दी को उसकी दुहिता के रूप में विकसित करने की बात कहीं। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होकर भी स्वामी जी ने अपने सभी ग्रन्थों की रचना हिन्दी भाषा में की। प्रथम कृति सत्यार्थ प्रकाश के हिन्दी में लिखने का मूल मन्तव्य कम शिक्षितो, अधविश्वासियों व शोषित समाज के बहुसंख्य जनों तक अपनी बात पहुंचाने का था। अपनी द्वितीय कृति ऋग्वेद भाष्य भूमिका में दयानन्द जी ने सूत्र रूप में सौर मण्डल की उत्तपत्ति से लेकर विमान विद्वया तक का उल्लेख किया है। जिसका आधार वैदिक ग्रन्थ है। आज गंदे एवं अश्लील साहित्य का प्रचार प्रसार पुस्तकों से लेकर मीडिया के द्वारा किया जा रहा है। महर्षि जी ने काफी पहले इसके प्रति हमें सचेत करते हुए पठनीय एवं अपठनीय ग्रन्थों की सूची प्रकाशित कर अपनी दूरदर्शिता प्रकट की। पुराणें मुगलकालीन रचनायें है जिनमें कपोल कल्पित तर्क विहीन, अश्लील, अवैज्ञानिक कथाओं का प्रचुर भण्डार है। कालजयी ऐतिहासिक व सामाजिक प्रबंधकाव्यों बाल्मीकि रामायण, व्यासकृत महाभारत, मनुस्मृति, गीता आदि में प्रचुर प्रक्षेपण का संकेत भी महर्षि ने जगह-जगह पर किया है। यह प्रक्षेपित अंश पूर्वापर प्रसंग रहित है जिन्हें विद्वान व्याकरण के आचार्य पकड़ सकते हैं साधारण पढ़े लिखे व्यक्ति नहीं। चित्र (मूर्ति के बजाय यदि चरित्र की पूजा की जाए तो उत्तम होगा तभी हमारी भावी का निर्माण राम व कृष्ण जैसे युग पुरूषों की परिपाटी के अनुरूप हो सकेगा। कुल मिलाकर हम महर्षि दायानन्द को प्रथम वेदोद्धारक के रूप में पाते हैं जिन्होंने वैदिक धर्म को प्राचीनतम सिद्ध करते हुए इसे मानव मात्र के लिए कल्याणप्रद बताया है। शास्त्रार्थ महारथी के रूप में महर्षि ने सत्य सनातन वैदिक धर्म को विश्व के तथाकथित धर्मों, सम्प्रदायों से श्रेष्ठ करके दिखाया। सत्यार्थ प्रकाश के अंतिम चार समुल्लास इसकी पुष्टि करते हैं। महर्षि ने अपने नाम से कोई मत नहीं चलाया। एकेश्वरवाद की स्थापना की तथा अद्वैते, द्वैत विशिष्टताद्वैत का प्रबल खण्डन कर त्रैतवाद (ईश्वर, जीव व प्रकृति) की सत्ता-महत्ता सिद्ध की। दयानन्द जी का दृष्टिकोण ''न दैन्यं न पलायनम्'' होकर भी समन्वयपरक था। उनके विचारों में अतिवाद की जगह शान्ति मार्ग अपनाने, नास्तिकता, बहुदेवतावाद की जगह एकेश्वरोपसना करने, धर्म व विज्ञान को परस्पर पूरक मानने, शारीरिक, आध्यात्मिक व समाजिक उन्नति के समन्वित प्रयास से समस्त संसार का उपकार करने का उदात्त भाव पिरोहित है। आर्य समाज की स्थापना का अभीष्ट महर्षि द्वारा बनाये गये इसके 10 नियमों में निहित है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामायः। सर्वे भ्रदाणि पश्यन्तु मा कस्चित् दुःखभाग भवेत्'।। ''हे ईश सब सुखी हों कोई न हों दुखारी। सब हो निरोग भगवन् धनधान्य के भंडारी।। सब भद्रभाव देखें, कल्याण के पथिक हों।

दुखिया न कोई होवें सृष्टि में प्राणधारी''। यह भावना केवल और केवल वैदिक प्रार्थना में मिलती है, विश्व के अन्य किसी मजहब सम्प्रदाय में नहीं।

।।ओ3म् शांतिः शांतिः शांतिः।।

चरित्रवान् सन्तान सौभाग्यशाली होती है

• धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मंत्री

१८ मई–गढ़मुक्तेश्वर। चरित्रवान सन्तान सौभाग्यशाली होती है उसका समाज में सभी सम्मान और विश्वास करते हैं वह माता–पिता को यशस्वी बनाने वाला होता है ये विचार गुरूकुल महाविद्यालय पूठ के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल में चल रहे "चरित्रनिर्माण शिविर" में बच्चों को यज्ञ के पश्चात् सम्बोधित कर रहे थे आपने बताया कि संसार में देखने में आता है कि कमजोर लोग बलवान् से डरते हैं, गरीब लोग धनवान् से प्रभावित रहते हैं और मूर्ख विद्वान् से डरते हैं लेकिन विद्वान्, बलवान, विद्वान्, धनवान होकर चरित्रवान के आगे नतमस्तक होते हैं जो बलवान–विद्वान, धनवान होकर चरित्रवान् नहीं होती उसका कहीं सम्मान नहीं होता।

यहां तक कि जो अपने का भगवान् कहते थे वे भी आज जेलों में इसीलिए पड़े है क्योंकि वे चरित्रवान् नहीं रह सके किसी अंग्रेजी विद्वान ने लिखा है कि धन गया तो कुछ भी नहीं गया स्वस्थ्य गया तो कुछ चला गया और यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया इस लिए चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिऐ। इस आयु में यदि इसका अभ्यास हो जाता है तो फिर पूरे जीवन स्वस्थ और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत होता है भगवान राम लक्षमण श्री कृष्ण योगीराज मा० दयानन्द सरस्वती के जीवन की घटनाओं से बच्चों को प्रेरणा प्रदान की वीर शिवाजी घटना जो गोहरवान् को मां कहकर सम्मान दिया था।

उर्वशी को अर्जुन ने मां कहा था मा० दयानन्द जी के व्रत को खण्डित करने की इच्छा से आई वेश्या को स्वामी जीने मां कहा तो वह रो पड़ी कि मुझे आज पहली बार किसी ने मां कहा है यह चरित्र बल ही मनुष्य को महान बनाता है, उससे कुल, परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति होती है अतः चरित्रवान बनकर अपने माता–पिता को भी सौभाग्यशाली बनाओ इससे पूर्व बच्चों को आचार्य राजीव जी ने योगासन–प्रणायाम के अभ्यासों का प्रशिक्षण दिया आचार्य सुधीर एवं आचार्य हर्ष जी ने बौद्धिक ज्ञान से लाभान्वित किया दिल्ली एवं आस–पास के आर्य युवकों के शिविर का समापन २० मई रिवार को प्रातः १० बजे से १२ बजे तक होगा जिसमें दिल्ली से भी लोग शोभा बढ़ाने के लिए पहुंच रहे हैं।

आर्य समाज कीर्तिनगर दिल्ली से लगभग १५–२० छात्र भी आये हुए हैं शिक्षक श्री सुरेश कुमार आर्य जी उनके साथ हैं आचार्य दिनेश जी, आर्य महेश जी, आचार्य सन्दीप जी, आचार्य मोहन तिवारी जी, प्रधान रामपाल सिंह, प्रदीप शास्त्री, शुभम शास्त्री आदि–महानुभाव उपस्थित रहे।

आरक्षण क्या उचित है

• नरसिंह सोनी आर्य

संविधान सभा निर्मात्री के चेयरमैन डॉ० भीमराव अम्बेडकर के अनुरोध पर पिछड़ा जाति के लोगों के उत्थान के लिए दस साल का आरक्षण दिया गया। जिसमें कोटा निर्धारित करके सरकारी नौकरियों में व स्कूल–कॉलेजों में भर्ती में छूट दी गयी। जो आज सत्तर साल बीत जाने के बाद भी चालू है। इस पुर्नविचार होना चाहिए। आरक्षण के वोट बैंक का रूप ले लिया हैं जो गलत है। जिनको आरक्षण का लाभ नहीं मिला है वो दुःखी हैं, और जो इसका लाभ वर्षों से उठा रहे है, वे इसे छोड़ना नहीं चाहते। मैं यानि सवर्ण समाज सरकार को चाहे सरकार किसी भी पार्टी की क्यों न हो पूछना चाहता हूं कि योग्यों का हक मारकर कमजोरों को आरक्षण के नाम पर अयोग्यों को लाभ देना कहां का न्याय हैं? सवर्ण और पिछड़ा वर्ग को आपस में लड़ाकर बांटना ही है। योग्यता रखने वाले सवर्ण विदेशों में जाकर बसे, उन देशों को लाभ पहुंचाऐं। अगर आप समझते है कि आरक्षण से बना डॉक्टर इंजीनियर वकील आदि सही है, योग्य है, तो मंत्री, नेता लोग विदेशों में जाकर क्यों इलाज करवाते हैं? क्या डॉ० भीमराव अम्बेडकर, जगजीवन राम आदि नेता लोग आरक्षण से योग्यता हासिल की थी। इसका जबाब दीजिए। योग्यता आरक्षण से नहीं आती, परिश्रम से आती है। अगर सरकार पिछड़ा वर्ग को सहायता देना चाहती है उनकी आर्थिक मदद करें, बेरोजगारी भत्ता दे, उनके योग्य कार्य देवे।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का यह कदम आज नासूर बन गया है। यह उनकी अदूरदर्शिता का परिणाम है, जो सवर्ण सत्तर साल से भुगत रहा है। अब इसको तत्काल समाप्त कर देना चाहिए। नहीं तो आने वाले चुनाव में जनता जबाब देगी। पिछड़ी जाति पर अत्याचार करना गलत है, लेकिन आरक्षण से इसका कोई लेना देना नहीं है। उस पर अत्याचार रोकने की प्रक्रिया अलग है। इससे ज्यादा और क्या लिखे? आरक्षण की दया पाकर कोई देश हितैशी नहीं बन सकता। मायावती निम्न वर्ग से होते हुए भी आज हजारों करोड़ों की मालिक है। सवर्ण भी गरीब हो सकता है और पिछड़ा वर्ग भी सम्पन्न हो सकता है। यह नहीं भूलना चाहिए। इसलिए आरक्षण गलत है। जनता की भावना व देश के होनहारों के उत्थान के लिए आरक्षण को अब बन्द कर देना चाहिए।

मैं आर्य समाज हूँ

• साभार प्रस्तुति– हिमांशु आर्य

पाखण्डियों का काल, अन्धविश्वासों का नाशक।
तथा सारी विचार धाराओं का सरताज हूँ।।
मैं आर्य समाज हूँ
संसार के सारे नास्तिक मुझसे ही घबराते हैं,
ईसाईयों के तर्क बच्चों की तरह हार जाते हैं।
जैनियों की तो मेरे सामने आने की हिम्मत ही नहीं होती,
बुद्ध जिन सवालों का जवाब न दे सके,
उन सवालों का जबाब हूँ।।२।।
बच्चों को मैं देशभक्त तथा ईश भक्त बनाता हूँ।
वैदिक संस्कृति का रक्षक, तथा पोषक हूँ,
मैं ईश्वर की आवाज़ हूँ।।३।।
संसार की सारी समस्याओं का हल मेरे पास है।
सब ओर से निराश जन की केवल मुझ से ही आस है।।
निराशा वादियों की आशा, सत्य की परिभाषा,
लोगों की उम्मीदों का सरताज हूँ।।४।।
परमात्मा द्वारा दिया गया वेद ज्ञान से मैं।
विश्व को शान्ति प्रदान करता हूँ।
विश्व के समस्त जन मुझसे अपनी,
समस्या का हल करते हैं।
क्योंकि मैं म० दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित,
सत्यार्थ प्रकाश की आवाज हूं।।५।।
संसार में मुझे कोई भी परास्त नहीं कर सकता,
क्योंकि मैं ईश्वर की आवाज हूँ।।
मैं आर्य सामज हूँ।।

जरा–सी भूल

कहते हैं कलिंग देश का राजा मधु (शहद) खा रहा था। उसके प्याले में से असावधानी से थोड़ा– शहद टपक कर जमीन पर आ गिरा। उस शहद को चाटने मक्खियाँ आ गिरी मक्खियों को इकट्ठी देख छिपकली ललचाई और उन्हें खाने के लिए आ पहुँची। छिपकली को खाने के लिए बिल्ली आ गई बिल्ली पर दो तीन कुत्ते टूट पड़ेक। बिल्ली तो भाग गयी लेकिन कुत्ते आपस में भिड़ गये–और लहू–लुहान हो गए। कुत्तों मालिक अपने–अपने कुत्तों के पक्ष में बातें करने लगे। इसी बीच तू–तू मैं बढ़ गई और लड़ाई ठन गई। लड़ाई में दोनों तरफ से भीड़ जमा हो गई और आखिर में शहर मे बलवा हो गया। दंगाईयों को मौका मिला और उन्होंने सरकारी खजाना लूट लिया और महल में आग लगा दी। राजा ने इतने बड़े उपद्रव का कारण पूछा तो मन्त्री ने जांच करके बताया कि भगवन्! आपके द्वारा असावधानी से गिराया हुआ थोड़ा–सा शहद ही इतने बड़े बलवे का कारण बन गया है। तब राजा ने समझा कि छोटी–सी असावधानी भी मनुष्य के लिए कितन बड़ा संकट उत्पन्न कर सकती है।

सार–असावधानों ही भूल की जननी है।

दिखावटी मेल

एक छिपकली, एक चुहिया, एक लोमड़ी और बकरी चारों सहेलियां थीं। चारों को एक नदी पार करनी थी, पर पार जाने का कोई साधन नहीं था। नदी के तट पर धूप का आनन्द ले रहा एक तगड़ा कछुआ था। चारों सहेलियां उसके पास खड़ी होकर बोलीं– ' हम सच्ची सहेलियां हैं। एक–दूसरे का साथ नहीं छोड़तीं। आप कृपा कर हम चारों को एक साथ नदी के उस पार उतार दें। कछुए को उनकी मित्रता बहुत भली लगी। उसने पीठ पर बिठाकर उतारने की बात स्वीकार कर ली चारों उसकी कमर पर बैठ गयी तो कछुआ चलने लगा। कछुआ थोड़ी दूर चला होगा कि उसने कहा, इतने वजन को लेकर नहीं चल सकता हूं। तुमसे से एक उतर जाओ। मुझसे चला नहीं जाता। चुहिया ने छिपकली को कमजोर देखा और पानी में धकेल दिया।

कुछ दूर चलने पर कछुए ने एक और उतरने की मांग की। लोमड़ी ने चुहिया को कमजोर देखा तो उसे धकेल दिया। बकरी और लोमड़ी दोनों पीठ पर बैठी थीं। कछुए ने कहा वजन अभी भारी है, एक को और धकेलाना पड़ेगा। बकरी ने लोमड़ी को धकेल दिया। अब अकेली बकरी पीठ पर रह गयी तो कछुए ने कहा– 'मुझे यह देखना था कि तुम सच्ची सहेलियां हो या झूठी? मजबूत ने कमजोर को गिराया तो मित्रता कहां रही? यह कहकर कछुए ने डुबकी लगाई और बकरी को भी नदी में बहा दिया।

सार–मात्र दिखावटी मेल से ही काम नहीं चलता। सच्चा मेल तो अपने से कमजोर पर दया करना ही है।

गुरुकुल सम्मेलन हरिद्वार के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण बैठक के विभिन्न स्थानों से गुरुकुल के आचार्यो ने और विद्वानों ने भाग लिया।

दिनांक 29.05.2018 गुरूकुल सम्मेलन हरिद्वार जो दिनांक 6, 7, 8, जुलाई 2018 को गुरूकुल कांगड़ी में मनाया जा रहा है सन्दर्भ सार्वदेशिक सभा दिल्ली में महत्वपूर्ण बैठक हुई जिसमें देश के गुरूकुल के विद्वानों ने भाग लिया आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा गुरूकुल पूठ के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने वक्तव्य में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज गुरूकुलों के प्रति लोगों में उदासीनता है। लोगों को आधुनिक शिक्षा के तरफ उनका रूझान हो रहा है, यह शिक्षा हमें हमारे परिवार को संस्कार विहीन बना रही है बच्चे परिवार दूर होते जा रहे है जिसका परिणाम माता-पिता को चुकाना पड़ रहा है। कई वर्षों से शिक्षा में कुछ अन्तर भी आया क्योंकि गुरूकुल के विद्यार्थी गुरूकुल में रहकर पढ़कर प्रोफेसर अध्यापक बन कर सरकारी नौकरियां करने लगते है, और गुरूकुलों में रहना नहीं चाहते क्योंकि गुरूकुल के पास इतना धन रही होता कि वह उनको इतना वेतन दे सके इस विषय में विचार करना होगा कुछ आधुनिक शिक्षा प्रणाली को भी जोड़ना होगा ताकि गुरूकुल के बच्चे समाज जाकर निराशा महसूस करें।

आज देश के अनेकों स्थान से आये हमारे विद्वान इस गुरूकुल सम्मेलन को सफल बनाने के लिए तथा नवीन बालकों में गुरूकुल के प्रति उत्साह भरने हेतु सम्मेलन में परिवार सहित भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनाये यह सम्मेलन हमें निश्चित ही एक नयी दिशा देकर जायेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 सम्मेलन को सफल बनाने हेतु भरपूर सहयोगी करेगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपने वक्तव्य में सभी निवेदन किया कि अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर तथा सहयोग देकर कार्यक्रम सफल बनाये मैं आये हुए सभी महानुभाव को अपनी मंगल कामना देता हूं। कार्यक्रम का संयोजन कर रहे सम्मेलन के आयोजक स्वामी आर्य वेश जी ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद दिया मन्त्री प्रो0 विट्ठलराव जी ने भी सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया इस अवसर पर कार्यक्रम में श्री माया प्रकाश त्यागी जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, अनिल आर्य जी, स्वामी राम वेश जी आदि देश अनेक स्थानों से आये विद्वान सन्यासी तथा गणमान्य महानुभाव ने कार्यक्रम को तन, मन, धन से सफल बनाने का संकल्प लिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के संयुक्त तत्वावधान में

विशाल योग साधना शिविर व वेद प्रचार कार्यक्रम

दिनांक– 8, 9, 10, 11 जून 2018 दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार तक

स्थान : महात्मा नारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़, तल्ला, जिला नैनीताल

अध्यक्षता – डॉ0 धीरज सिंह, का0 प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, लखनऊ।

शिविर संचालन– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, लखनऊ।

शिविर व्यावस्थापक– कोषाध्यक्ष– अरविन्द कुमार, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, लखनऊ ।

विशेष आमंत्रित– श्री गोविन्द सिंह भण्डारी–प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड।

श्री दयाकृष्ण काण्डपाल– मंत्री, आर्य प्रतिनधि सभा उत्तराखण्ड।

जलपान एवं भोजन व्यवस्था

जवाहरलाल तनेजा– प्रधान, आर्य समाज रूद्रपुर, भारत सिंह आर्य, अशोक कुमार आर्य, पिलखुवा, सन्दीप मुनि, राजेन्द्र चांदना–रूद्रपुर, सोनू नयाल–रामगढ़ तल्ला, नवीन चन्द्र आर्य–मंत्री आर्य समाज भवाली, अन्तरंग सदस्य, प्रधानाचार्य– महात्मा नारायण स्वामी राजकीय इण्टर कालेज, रामगढ़तल्ला, नैनीताल।

आमंत्रित विद्वान

डॉ० विनय विद्यालंकार–मंत्री, आर्य समाज हल्द्वानी, डॉ० पवित्रा वेदालंकार–अधिष्ठात्री, गुरूकुल शासनी–अलीगढ़, पं० प्रभात कुमार शास्त्री–रूद्रपुर, पं० हरीश कुमार शास्त्री–आ०प्र० सभा, लखनऊ। आचार्य सोमव्रत शास्त्री–लखनऊ,।

सभा कार्यालय, लखनऊ

श्री कृष्ण मुरारी – 9454288916, श्री भुवन चन्द्र पाठक– 9450360506, श्री आषुतोष सिंह चौहान– 9453978978

शिविर व्यवस्था–आर्य समाज रूद्रपुर, सम्पर्क – प्रभात कुमार शास्त्री, मो0 9412946311, सन्दीप मुनि, मो0– 9759477410।

इस योग शिविर में आप सभी आर्य महानुभावों सादर आमंत्रित हैं। कृपया भारी संख्या में योग में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर शिविर को सफल बनायें। शिविर व्यवस्था के लिए प्रतिव्यक्ति को प्रतिवर्ष की तरह ५००/– शुल्क निर्धारित किया गया है।

कार्यक्रम– प्रतिदिन प्रातः ५ से ७ बजे तक योगसाधना और ६.०० से १०.०० बजे तक जलपान। १०.३० बजे से १२.०० बजे तक भजन प्रवचन।

मध्याह्न– ३.०० बजे से ५.०० बजे तक संगोष्ठी भजन एवं प्रवचन।

५.०० से ६.०० बजे तक नित्यक्रियायें ६.०० से ७.०० बजे तक योग कक्षाएं।

७.०० बजे भोजन। रात्रि ८.०० से १०.०० बजे तक वेद प्रवचन भजन।

विशेष नोट :– शिविर में भाग लेने आने वाले महानुभावों से निवेदन है कि रात्रि विश्राम के लिए अपने साथ एक कम्बल अवश्य लायें।

पृष्ठ १ का शेष

आर्य समाज द्वारा चरित्र निर्माण...

सह संयोजिका श्रीमती पुष्पाञ्जलि शर्मा जी, को बधाई दी। और बहन पूनम आर्या एवं प्रवेश आर्या जी के निर्देशन में चल रहे शिविर के अनुशासन की प्रशसंसा की और योग शिविर की सफलता के लिए सभी अधिकारियों का धन्यवाद दिया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा दिल्ली से पधारे हुए प्रधान स्वामी आर्यवेश जी सभी को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम के समापन पर अन्त में प्रधान घनश्याम दास ने सभी कार्यकर्ताओं तथा अध्यापक एवं प्रधानाचार्य जी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में राम स्वरूप जी मन्त्री आर्यसमाज, नरेन्द्र पाल कोषाध्यक्ष, संजय सिंह जी आदि अन्य महानुभाव अधिकारी उपस्थित रहे।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्स: ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०९४१२७४४३४१, मंत्री- ०९८३७४०२१९२, व्यवस्थापक- ९३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

आर्य वीरांगना कन्या चरित्र निमार्ण एवं योग शिविर, खुर्जा बलदेव आश्रम के कार्यक्रम की झलकियां

ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
के तत्वावधान में
स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के सानिध्य में

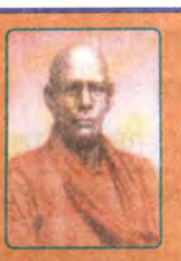

दिनांक ०८, ०९, १०, ११ जून २०१८ दिन- शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार
तक **"बृहद् योग शिविर का आयोजन" प्रातः 5.00 बजे से 8.00 तक प्रतिदिन**
स्थान- महात्मानारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला, नैनीताल (उ०ख०)
योग शिविर में आप सभी परिवार सादर आमंत्रित हैं कृपया शिविर में भाग लेकर योग, भजन, प्रवचन का लाभ उठायें

डा. धीरज सिंह
प्रधान

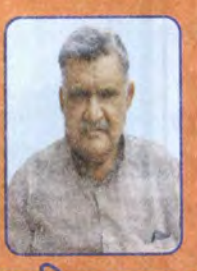
अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।